एम0ए0 हिन्दी (उत्तरार्द्ध) 2009–10

प्रथम प्रश्न पत्र

आधुनिक हिन्दी काव्य

पूर्णांक– 100

पाठ्य ग्रन्थ :

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–भारतेन्दु समग्र से प्रेम माधुरी छंद,1,2,3,10,12,20
2. मैथिलीशरण गुप्त – साकेत अष्टम एवं नवम सर्ग
3. जयशंकर प्रसाद : कामायनी (व्याख्या के लिए निर्धारित सर्ग, चिंता, श्रद्धा, लज्जा, इड़ा)
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : तुलसीदास
5. सुमित्रानंदन पन्त : रश्मिबंध

(व्याख्या के लिए कविता संख्या,5,7,12,17,19,21,29,38,53,54,60

6. महादेवी वर्मा : संधिनी

(व्याख्या के लिए कविता सं0 8,16,20,21,22,23,31,37,40,45,57

प्रतिनिधि संकलन :–

1. अज्ञेय : नदी के द्वीप, असाध्यवीण
2. नागार्जुन : बादल को घिरते देखा है, बहुत दिनों के बाद, उनको प्रणाम, अकाल और उसके बाद।
3. गिरिजा कुमार माथुर : अधूरा गीत, बौनों की दुनिया, माटी और मेघ, कौन थकान हरे जीवन की।
4. धर्मवीर भारती : टूटा पहिया, नया रस, केवल तन का रिश्ता, कविता की मौत।

अंक विभाजन	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक प्रश्न	4x15=60

सहायक पुस्तकें :

1. छायावाद : पुनर्मूल्यांकन – सुमित्रानंदन पंत
2. छायावाद का काव्यशिल्प – डॉ0 प्रतिमा कृष्णबल
3. छायावाद से नयी कविता – डॉ0 रमेशचन्द्र शर्मा
4. नयी कविता : नए धरातल – डॉ0 हरिचरण शर्मा
5. नयी कविता और अस्तित्ववाद – डॉ0 रामविलास शर्मा
6. साकेत : एक अध्ययन – डॉ0 नगेन्द्र
7. साकेत के नवम सर्ग का काव्य–वैभव – डॉ0कन्हैयालाल सहल
8. कामायनी–चिंतन – डॉ0विमल कुमार जैन
9. कामायनी के अनुशीलन की समस्याएँ – डॉ0 नगेन्द्र
10. निराला की साहित्य–साधना – डॉ0 रामविलास शर्मा
11. महादेवी – सं0इन्द्रनाथ मदान
12. हिन्दी कविता में युगान्तर – डॉ0 सुधीन्द्र
13. गुप्त जी की काव्य साधना – डॉ0 उमाकान्त गोयल
14. हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष – शिवदान सिंह चौहान
15. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – डॉ0 ब्रजरत्न दास
16. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
17. भारतेन्दु और अन्य सहयोगी कवि – डॉ0 किशोरीलाल गुप्त

एम0ए0 हिन्दी (उत्तरार्द्ध) 2009–10

द्वितीय प्रश्न पत्र

नाटक, एकांकी एवं उपन्यास

पूर्णांक– 100

पाठ्य ग्रन्थ :

1. चन्द्रगुप्त	–	जयशंकर प्रसाद
2. आठवाँ सर्ग	–	सुरेन्द्र वर्मा
3. गोदान	–	प्रेमचन्द्र
4. मैला आंचल	–	फणीश्वरनाथ रेणु
5. बाणभट्ट की आत्मकथा	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रतिनिधि एकांकी संकलन –

1. डॉ0 राम कुमार वर्मा	–	प्रतिशोध
2. उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	–	अधिकार का रक्षक
3. विष्णु प्रभाकर	–	सड़क
4. मोहन राकेश	–	प्यालियाँ टूटती हैं
5. सुरेन्द्र वर्मा	–	हरी घास पर घण्टा भर
6. सफदर हाशमी	–	अपहरण भाई–चारे का।

अंक विभाजन –

समीक्षात्मक प्रश्न	4x15=60
व्याख्यात्मक	4x10=40

सहायक पुस्तकें :

1. हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास	–	डॉ0 सुरेश सिन्हा
2. उपन्यास सिद्धान्त और संरचना	–	डॉ0 रवीन्द्र भ्रमर
3. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास	–	डॉ0 धनराज
4. कथा साहित्य के मनोवैज्ञानिक समीक्षा सिद्धान्त	–	डॉ0 देवराज उपाध्याय
5. हिन्दी कथा शिल्प का विकास	–	डॉ0 प्रतापनारायण टण्डन
6. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन	–	श्री जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
7. प्रेमचन्द्र और उनका युग	–	डॉ0 रामविलास शर्मा
8. गोदान मूल्यांकन	–	डॉ0 इन्द्रनाथ मदान
9. गोदान के अध्ययन की सीमायें	–	डॉ0 गोपाल रार.
10. आधुनिक नाटकों का मसीहा– मोहन राकेश	–	डॉ0 गोविन्द चातक
11. मोहन राकेश की रंग–दृष्टि	–	डॉ0 जगदीश शर्मा
12. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच	–	डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल
13. हिन्दी एकांकी की शिल्पविधि का विकास	–	डॉ0 सिद्धनाथ कुमार
14. हिन्दी एकांकी : उद्‌भव और विकास	–	डॉ0 रामचरण महेन्द्र
15. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य में युगबोध	–	डॉ0 मंजरी त्रिपाठी
16. हिन्दी नाटक : आजकल	–	जयदेव तनेजा
17. प्रसाद के नाटक	–	जयदेव तनेजा

एम०ए० हिन्दी (पूर्वार्द्ध) 2008–09

तृतीय प्रश्न पत्र

हिन्दी साहित्य, भाषा और देवनागरी लिपि का इतिहास

पूर्णांक– 100

क.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	50 अंक
ख.	हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का इतिहास	40 अंक
ग.	उर्दू साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (सामान्य परिचय)	10 अंक

क. हिन्दी साहित्य का इतिहास

1. साहित्येतिहास लेखन की परम्परा

– हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ।

– हिन्दी साहित्य का इतिहास, सीमा–निर्धारण और नामकरण।

– हिन्दी साहित्य : आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ साहित्य, रासो काव्य, जैन साहित्य।

2. पूर्व मध्यकाल

– पूर्व मध्यकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना, भक्ति आंदोलन, विभिन्न काव्यधाराएँ तथा उनका वैशिष्ट्य।

3. उत्तर मध्यकाल

– उत्तर मध्यकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, दरबारी संस्कृति और लक्षण ग्रंथों की परम्परा

– रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिसिद्ध और रीति मुक्त)

4. आधुनिक काल

– आधुनिक काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (सन् 1857 ई0 की क्रांति और पुनर्जागरण)

– भारतेन्दु युग : प्रमुख प्रवृत्तियाँ।

– द्विवेदी युग : प्रमुख प्रवृत्तियाँ।

– छायावादी काव्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ।

– छायावादोत्तर काव्य – प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, समकालीन कविता।

5. हिन्दी गद्य का विकास

ख. हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि का इतिहास

1. हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

– प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ।

– वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ।

– मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ – पालि, प्राकृत, शौरसैनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ।

2. हिन्दी का भौगोलिक विस्तार :

– हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ।

– खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

3. हिन्दी का भाषिक स्वरूप –

– हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था – खंड्य और खंड्येतर।

– हिन्दी शब्द रचना – उपसर्ग, प्रत्यय, समास।

रूपरचना– लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप।

हिन्दी वाक्य रचना : पदक्रम और अन्विति।

4. हिन्दी के विविध रूप :

– सम्पर्क, भाषा, राष्ट्र भाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम भाषा, संचार भाषा।

– हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।

5. देवनागरी लिपि :

– देवनागरी लिपि का इतिहास।

– देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और मानकीकरण।

ग. उर्दू साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (सामान्य परिचय)

सहायक पुस्तकें :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य की भूमिका – डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. साहित्य की समस्याएँ – डॉ० शिवदान सिंह चौहान
5. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ० नगेन्द्र
7. हिन्दी का गद्य साहित्य – डॉ० रामचन्द्र तिवारी
8. हिन्दी भाषा का इतिहास – डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
9. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ० उदयनारायण तिवारी
10. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा
11. हिन्दी भाषा और लिपि का विकास – डॉ० सत्यनारायण त्रिपाठी
12. उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– एहतेशाम हुसैन
13. उर्दू भाषा और साहित्य – फिराक गोरखपुरी

एम0ए0 हिन्दी (पूर्वार्द्ध) 2008–09
चतुर्थ प्रश्न पत्र
साहित्य शास्त्र और समालोचना के सिद्धान्त

पूर्णांक– 100

1. संस्कृत काव्य शास्त्र :

– काव्य – लक्षण, काव्य–हेतु, काव्य–प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

– रस सिद्धान्त: रस का स्वरूप, रस–निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण

– अलंकार–सिद्धान्त: मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

– रीति–सिद्धान्त: रीति की अवधारणा, काव्य–गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ।

– वक्रोक्ति– सिद्धान्त: वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद, ध्वनि–सिद्धान्त, ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि–सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, गुणीभूत–व्यंग्य, चित्र काव्य।

– औचित्य सिद्धान्त: प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

2. साहित्यिक विधाएँ:रचना प्रविधियों का अध्ययन तथा उनकी पारस्परिक तुलना – काव्य, महाकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक, नाटक, उपन्यास, कहानी एकांकी, निबंध, गद्य काव्य संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी साहित्य, यात्रावृत्त, ध्वनिरूपक।

3. समालोचना का स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ :

– समालोचना का उद्‌भव और विकास।

– समालोचना की उपयोगिता।

– अच्छे समालोचक में अपेक्षित विशेषताएँ।

– समालोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय

4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्लेटो, अरस्तु, कॉलरिज, मैथ्यू आर्नल्ड के काव्य सिद्धान्तों का अध्ययन

– आधुनिक अवधारणाएँ

अंक विभाजन

संस्कृत काव्यशास्त्र	40 अंक
काव्य विधाएँ	20 अंक
आधुनिक समालोचना का स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ –	30 अंक
पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं आधुनिक अवधारणाएँ –	10 अंक

सहायक पुस्तकें :

1. रसमीमांसा – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. साहित्यालोचन – डॉ0 शिवदान सिंह चौहान
3. काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ0 नगेन्द्र
4. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ0 सत्यदेव चौधरी
5. नई समीक्षा के प्रतिमान – डॉ0 निर्मला जैन
6. हिन्दी आलोचना – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी
7. सिद्धान्त और अध्ययन – डॉ0 गुलाबराय
8. भारतीय काव्यधारा की परम्परा – डॉ0 नगेन्द्र
9. रससिद्धान्त का स्वरूप विश्लेषण– डॉ0 आनन्द प्रकाश दीक्षित
10. भारतीय एव पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त – डॉ0 गणपति चन्द्र गुप्त
11. साहित्य समीक्षा के सिद्धान्त–भाग 2 – डॉ0 गोविन्द त्रिगुणायत
12. हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास – डॉ0 भगवत स्वरूप मिश्र
13. भारतीय काव्य शास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य–चिंतन – सभापति मिश्र

एम0ए0 हिन्दी (पूर्वार्द्ध) 2008–09
पंचम प्रश्न पत्र
भारतीय साहित्य

पूर्णांक– 100

पाठ्य विषय

प्रथम खंड :

– भारतीय भाषाओं के साहित्य का स्वरूप
– भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
– भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब
– भारतीयता का समाजशास्त्र
– हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

द्वितीय खंड :

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित रचनाएँ निर्धारित हैं :–

1. गीतांजलि : रवीन्द्रनाथ टैगोर (काव्य)
2. अग्निगर्भ : महाश्वेता देवी (बंगला उपन्यास)
3. वर्षा की सुबह : सीताकान्त महापात्र (उड़िया काव्य)
4. घट श्राद्ध : समग्र कहानियाँ : यू0आर0 अनन्तमूर्ति (कन्नड़)
5. घासीराम कोतवाल : विजय तेंदुलकर (मराठी) नाटक

नोटः इन पुस्तकों से आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, व्याख्यात्मक नहीं।

अंक विभाजन :

विवरणात्मक	60 अंक
लघुउत्तरीय प्रश्न	20 अंक
अति लघुउत्तरीय प्रश्न	20 अंक

सहायक पुस्तकें :

1. भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं– डॉ0 रामविलास शर्मा
2. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएँ – डॉ0 परशुराम चतुर्वेदी
3. प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा – श्री अशोक केलकर
4. भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय अस्मिता – सं0 श्री मुकंद द्विवेदी
5. विश्व साहित्यशास्त्र – श्री वीर भारत तलवार
6. राष्ट्रीय नवजागरण और साहित्य – श्री वीर भारत तलवार
7. साहित्य और संस्कृति – श्री अमृतलाल नागर
8. आज का भारतीय साहित्य – साहित्य अकादमी प्रकाशन
9. भारतीय साहित्य – सं0 डॉ0 नगेन्द्र
10. भारतीय साहित्य– तुलनात्मक अध्ययन– डॉ0 ब्रजेश्वर वर्मा
11. भारतीय साहित्य – डॉ0 लक्ष्मीकांत पांडेय
12. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास – डॉ0 नगेन्द्र (सम्पादक)

एम0ए0 हिन्दी (उत्तरार्द्ध) 2009–10

तृतीय प्रश्न पत्र

विविध विकल्प

पूर्णांक– 100

(क) किसी एक साहित्यकार का विशेष अध्ययन:

1. कबीर
2. जायसी
3. सूरदास
4. तुलसीदास
5. जयशंकर प्रसाद
6. महादेवी वर्मा
7. प्रेमचन्द
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी
9. कृष्णा सोबती

(ख) हिन्दी लोकसाहित्य

(ग) पत्रकारिता

(घ) भाषा विज्ञान

(ङ) स्त्री विमर्श और हिन्दी साहित्य

(च) दलित विमर्श और हिन्दी साहित्य

(छ) प्रयोजनमूलक हिन्दी

क. किसी एक साहित्यकार का विशेष अध्ययन

पूर्णांक– 100

1. कबीर

1. मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन और उसमें कबीर का स्थान।
2. कबीर का जीवन–वृत्त।
3. कबीर की रचनाओं की विभिन्न पाठ–परम्पराएँ और उनकी प्रामाणिकता।
4. कबीर की रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन
5. कबीर की विचारधारा : दार्शनिक, सामाजिक, धार्मिक, भक्तिपरक, साधनापरक और उनका विशिष्ट योगदान।
6. कबीर का काव्य, उसकी लोकधर्मी परम्परा, भावाभिव्यक्ति की शैली तथा अन्य विशेषताएँ।
7. कबीर के काव्य का कलापक्ष, छंद, अलंकार, उलटवासी और उसकी परम्परा।
8. कबीर की भाषा, विविध रूप, मूल आधार, बोली भाषा : अभिव्यंजना पक्ष।
9. कबीर के सम्पूर्ण कृतित्व का मूल्यांकन।

अंक विभाजन	व्याख्या	4x10=40
	आलोचनात्मक	4x15=60

सहायक पुस्तकें :

1. कबीर वाड्मय खंड 1 – डॉ0 जयदेव सिंह
2. कबीर वाड्मय खंड 2 – डॉ0 जयदेव सिंह
3. कबीर वाड्मय खंड 3 – डॉ0 जयदेव सिंह
4. कबीर ग्रंथावली – डॉ0 माता प्रसाद गुप्त
5. कबीर ग्रंथावली – डॉ0 पारसनाथ तिवारी
6. संत कवि कबीर – भवानी दत्त उप्रेती
7. कबीर : एक नयी दृष्टि – रघुवंश
8. कबीर का रहस्यवाद – रामकुमार वर्मा
9. कबीर साहित्य की परम्परा – परशुराम चतुर्वेदी

10. कबीर व्यक्ति, कृतित्व एवं सिद्धान्त	–	सरनाम सिंह शर्मा
11. कबीर की भाषा	-	माताबदल जायसवाल
12. कबीर के काव्य रूप	–	नजीर मुहम्मद
13. कबीर की विचारधारा	–	गोविन्द त्रिगुणायत
14. कबीर मीमांसा	–	रामचन्द्र तिवारी
15. कबीर	–	हजारी प्रसाद द्विवेदी
16. महावीर प्रसाद, कबीर वीजक	–	हंसराज शास्त्री
17. संत साहित्य के प्रेरणा स्रोत	–	आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
18. कबीर काव्य में प्रतीक–विधान	–	डॉ0 ब्रह्मजीत गौतम
19. कबीर	–	विजयेन्द्र स्नातक

2. जायसी

पूर्णांक– 100

1. जीवनी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. मध्यकालीन साहित्य का सांस्कृतिक पक्ष
3. सूफीमत और जायसी
4. प्रेमभक्ति साधना और जायसी
5. इस्लाम का एकेश्वरवाद और भारतीय धर्म–साधना का अद्वैतवाद स्वरूपगत और दृष्टिगत भेद
6. भारतीय सूफी काव्य का प्रेमाख्यानक स्वरूप

क. प्रेमाख्यानक स्वरूप की प्रेरक परिस्थितियाँ

1. बौद्ध तंत्र साधना और जायसी, पद्मावत पर बौद्ध धर्म की छाया
2. नाथपंथ और जायसी
3. इस्लाम और जायसी

ख. धर्म दर्शन की रहस्य साधना का पक्ष और जायसी

1. रहस्यवाद की व्याख्या
2. उपास्यस्वरूप प्रेमत्व
3. भावमूलक रहस्यवाद
4. यौगिक या साधनात्मक रहस्यवाद
5. प्रकृति मूलक रहस्यवाद
6. अभिव्यक्ति मूलक रहस्यवाद

ग. बुद्धिवादी दार्शनिक मुसलमान और जायसी की अन्योक्ति सूफी कवियों की भाषा का शिल्पगत वैशिष्ट्य

1. कलागत शिल्प और भावगत–शिल्प
2. प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से
3. कलागत और समाजगत वैशिष्ट्य
4. सूफी काव्य की महत्वपूर्ण कृतियों का अध्ययन : जायसी कृत, पदमावत, आखिरी कलाम, कहरानामा, मसलानामा, चित्ररेखा, कन्हावत, कुतुबनकृत

मृगावती, दाऊद कृत चंदायन, मंझनकृत मधुमालती

घ. पद्मावत की व्याख्या (सम्पूर्ण पद्मावत, सम्पादक डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल)

1. पद्मावत का पाठ भेद
2. क. जायसी ग्रंथवाली, सम्पादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
   ख. पद्मावत, सम्पादक डॉ0 माता प्रसाद

अंक विभाजन	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक	4x15=60

सहायक पुस्तकें :

1. जायसी ग्रन्थावली	–	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. जायसी का पद्मावत, शास्त्रीय भाष्य	–	डॉ0 गोविन्द त्रिगुणायत
3. पद्मावत (मूल और संजीवनी व्याख्या)	–	डॉ0वासुदेवशरण अग्रवाल
4. ईरान के सूफी कवि	–	बांके बिहारी तथा कन्हैयालाल
5. कबीर और जायसी के रहस्यवाद का तुलनात्मक अध्ययन	–	गोविन्द त्रिगुणायत
6. तसव्वुक अथवा सूफीमत	–	डॉ0 चन्द्रबली पाण्डेय
7. मध्यकालीन धर्म-साधना	–	डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
8. मध्यकालीन धर्म-साधना	–	डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
9. पद्मावत का काव्य-सौन्दर्य	–	शिव सहाय पाठक
10. पद्मावत का ऐतिहासिक आधार	–	इन्द्रचन्द्र नारंग
11. हिन्दी जायसी प्रेमाख्यान	–	परशुराम चतुर्वेदी
12. भक्ति का विकास	–	डॉ0 मुंशीराम शर्मा
13. मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतांत्रिक अध्ययन	–	डॉ0 सत्येन्द्र
14. मध्ययुगीन प्रेमाख्यान	–	श्याम मनोहर पाण्डेय

15. रहस्यवाद और हिन्दी कविता	–	गुलाब राय, शम्भूनाथ पाण्डेय
16. सूफीमत साधना और साहित्य	–	रामपूजन तिवारी
17. सूफी महाकवि जायसी	–	डॉ0 जयदेव
18. सूफीमत और हिन्दी साहित्य	–	डॉ0 विमल कुमार जैन
19. जायसी एक नयी दृष्टि	–	डॉ0 रघुवंश
20. हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य	–	डॉ0 कमल कुलश्रेष्ठ
21. जायसी	–	डॉ0 विजयदेव नारायण साही
22. जायसी साहित्य में अप्रस्तुत योजना	–	डॉ0 विद्याधर त्रिपाठी
23. जायसी की भाषा	–	डॉ0 प्रभाकर शुक्ल

3. सूरदास

पूर्णांक – 100

सूरदास का युग और उनसे सम्बन्धित सामान्य अध्ययन :

1. मध्ययुग : सामाजिक अवस्था और भक्ति आन्दोलन
2. वैष्णव आचार्य और बल्लभाचार्य
3. शुद्धाद्वैत दर्शन और पुष्टिमार्गीय भक्ति सम्प्रदाय
4. बल्लभ सम्प्रदाय तथा अन्य कृष्ण भक्तिरूप
5. कृष्णभक्ति साहित्य की परम्परा
6. अष्टछाप और सूरदास
7. सूरदास की भक्ति– और उसके दार्शनिक और धार्मिक आधार
8. सूरदास का जीवन चरित्र– बाह्य साक्ष्य, अंत:साक्ष्य, जनश्रुति
9. सूरदास का जीवन–वृत्त
10. सूरदास की रचनायें और उनकी प्रमाणिकता, सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी
11. 'सूरसागर' की हस्तलिखित प्रतियाँ, मुद्रित संस्करण, उसके पाठ की समस्या, उनका सामान्य रूप

सूरसागर का अध्ययन

1. विनय पद : सूरसागर भाग–1, सम्पादक नंद दुलारे वाजपेयी
2. बाललीला – सूरसागर भाग–2, सम्पादक नंद दुलारे वाजपेयी
3. मधुर लीला – रास तक
4. अनुराग लीला – रास से मथुरा–गमन के पूर्व तक
5. विरह लीला – मथुरा–गमन से उद्धव प्रसंग तक
6. द्वारिका–गमन, सुदामा–प्रसंग, कुरूक्षेत्र–मिलन
7. रामभक्ति सम्बन्धी पद
8. भागवत की कथा के प्रसंग से आठवें खण्ड तक तथा 11–12 स्कन्ध
9. सूरसागर का स्वरूप : आकारगत, क्रमगत, काव्यगत

10. सूरसागर पर श्रीमद्भागवत तथा अन्य पुराणों का प्रभाव : सूरदास की मौलिकता

11. सूरदास की प्रबन्ध कल्पना, कृष्णलीला, विविध लीलायें और खण्ड–कथानक

12. सूर की पात्र–कल्पना

13. सूर की गीत–पद्धति

14. सूर की भावाभिव्यंजना

15. सूर का वस्तु–वर्णन, कौशल और सौन्दर्य–सृष्टि

16. सूर की भाषा–शैली और उसके विविध रूप

17. सूर की अलंकार–योजना

18. सूर का छन्द–विधान

19. हिन्दी साहित्य में सूरदास का स्थान

अंक विभाजन	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक प्रश्न	4x15=60

सहायक पुस्तकें :

1. नन्द दुलारे वाजपेयी	–	सूरदास
2. रामचन्द्र शुक्ल	–	भ्रमरगीत सार की भूमिका
3. प्रभुदयाल मीतल	–	अष्टछाप परिचय:सूर सर्वस्व
4. हरवंशलाल शर्मा	–	सूर और उनका काव्य
5. सावित्री श्रीवास्तव	–	नाभादास कृत भक्तमाल तथा प्रियादास कृत टीका का पाठालोचन
6. ब्रजेश्वर वर्मा	–	सूरदास
7. मनमोहन गौतम	–	सूर की काव्यकला
8. बल्लभाचार्य	–	रास पंचाध्यायी श्री सुबोधिनी अनु0 जगन्नाथ चतुर्वेदी
9. बिट्ठलनाथ	–	भक्तिहंस (अनु0 केदारनाथ)
10. हजारी प्रसाद द्विवेदी	–	सूर साहित्य

11. श्रीमद्भागवत	–	गीता प्रेस गोरखपुर
12. मीरा श्रीवास्तव	–	कृष्ण काव्य में सौन्दर्यबोध एवं रसानुभूति
13. डॉ0 नगेन्द्र	–	सूरदास : ए रिवोल्यूशन
14. लक्ष्मीशंकर निगम	–	श्रीमद्बल्लभाचार्य, उनका शुद्धाद्वैत एवं पुष्टिमार्ग
15. राजेन्द्र कुमार वर्मा	–	सूर–शब्दसागर

4. तुलसीदास

पूर्णांक – 100

तुलसीदास का युग और उनसे सम्बन्धित सामान्य अध्ययन :

1. तुलसीदास का कवि व्यक्तित्व : सीमाएँ तथा विशेषताएँ
2. मध्ययुगीन चिन्तनधारा और तुलसी की जीवन–दृष्टि
3. तुलसीदास के विचारों की सामाजिक पृष्ठभूमि
4. भक्ति–आन्दोलन का उद्‌भव विकास
5. विविध भक्ति सम्प्रदाय तथा तुलसी की दास भक्ति
6. तुलसीदास के दार्शनिक विचार
7. तुलसी और राम साहित्य की परम्परा
8. रामकथा की आधारभूत सामग्री और उनके ग्रहण का दृष्टिकोण
9. तुलसीदास के जीवन वृत्त की सामग्री और समस्याएँ
10. तुलसीदास का प्रमाणित जीवन–वृत्त

1. तुलसीदास की रचनाओं का अनुशीलन
   (क) प्रामाणिकता (ख) तिथि–क्रम और (ग) पाठ की समस्या की दृष्टि से
2. 'रामचरितमानस' का विशेष अध्ययन
3. 'कवितावली' का विशेष अध्ययन
4. तुलसीदास की अन्य कृतियों का अध्ययन

1. तुलसीदास द्वारा विविध काव्य–शैलियों तथा काव्य–रूप
2. तुलसीदास और काव्य– शिल्प का विधान (क) रस (ख) छंद (ग) अलंकार आदि की दृष्टि से
3. तुलसी द्वारा प्रयुक्त विविध भाषा–रूप
4. तुलसीदास की पात्र–कल्पना और चरित्र–चित्रण
5. तुलसी की मौलिकता
6. महाकाव्यकार तुलसीदास
7. तुलसीदास के सम्पूर्ण साहित्यिक कृतित्व का मूल्यांकन

सहायक पुस्तकें :

1. गोस्वामी तुलसीदास	–	रामचन्द्र शुक्ल
2. तुलसीदास	–	माताप्रसाद गुप्त
3. तुलसी की साधना	–	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
4. रामकथा	–	कामिल बुल्के
5. मानस की रूसी भूमिका (वरान्निकोव)	–	केसरी नारायण शुक्ल
6. तुलसीदास और उनका युग	–	राजपति दीक्षित
7. तुलसी: आधुनिक वातायन से	–	रमेश कुंतल मेघ
8. लोकवादी तुलसीदास	–	विश्वनाथ त्रिपाठी
9. तुलसीदास: आज के संदर्भ में	–	युगेश्वर
10. मानस के रचना–शिल्प का विश्लेषण	–	योगेन्द्र प्रताप सिंह
11. तुलसी दर्शन–मीमांसा	–	विद्यानिवास मिश्र
12. तुलसी–मीमांसा	–	उदयभानु सिंह
13. तुलसीदास: हिज माइण्ड एण्ड आर्ट	–	डॉ0 नगेन्द्र (सम्पादक)
14. तुलसीदास की भाषा	–	डॉ0 देवकी नंदन श्रीवास्तव

अंक विभाजन	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक	4x15=60

5. जयशंकर प्रसाद

पूर्णांक – 100

1. प्रसाद की जीवनी और साहित्यिक प्रवृत्तियों का उदय।

2. प्रसाद साहित्य की पृष्ठभूमि।

3. प्रसाद साहित्य की कोटियाँ : काव्य नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध और आलोचना।

4. प्रसाद का जीवनगत दृष्टिकोण और भारतीय दर्शन

5. प्रसाद की कला

6. प्रसाद का मनोविज्ञान और साहित्य–सृजन

7. आधुनिक हिन्दी साहित्य और प्रसाद

क. प्रसाद का काव्य–साहित्य : झरना, लहर, आंसू और कामायनी का विशेष अध्ययन

ख. प्रसाद का नाटक साहित्य– अजातशत्रु से लेकर ध्रुवस्वामिनी तक।

ग. प्रसाद के उपन्यासः कंकाल, तितली और इरावती।

घ. प्रसाद की कहानियाँ तथा उनका निबंध–साहित्य।

सहायक पुस्तकें :

1. जयशंकर प्रसाद – नन्द दुलारे वाजपेयी

2. कामायनीः एक पुनर्विचार – मुक्तिबोध

3. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ – नगेन्द्र

4. प्रसाद का काव्य – प्रेमशंकर

5. प्रसाद के नाटकों का पुनर्मूल्यांकन	–	सिद्धनाथ कुमार
6. कामायनी–अनुशीलन	–	रामलाल सिंह
7. कामायनी की पारिभाषिक शब्दावली	–	वैदज्ञ आर्य
8. प्रसाद के नाटकों का स्वरूप और संरचना	–	गोविन्द चातक
9. प्रसाद का कथा–साहित्य	–	जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव
10. कामायनी की आलोचना–प्रक्रिया	–	गिरिजाराय
11. प्रसाद की रचनाओं में संस्कारगत परिवर्तनों का अध्ययन	–	अनूप कुमार
12. प्रसाद का गद्य	–	सूर्य प्रसाद दीक्षित

अंक विभाजन	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक	4x15=60

6. महादेवी वर्मा

पूर्णांक – 100

1. महादेवी वर्मा – जीवनी एवं साहित्यिक अवदान।
2. महादेवी के साहित्य के विविध रूप।
3. महादेवी वर्मा का नारीगत दृष्टिकोण।
4. महादेवी वर्मा के साहित्य का स्वर।
5. महादेवी वर्मा की गद्य एवं पद्य–शैली।
6. महादेवी वर्मा का समग्र साहित्य।

सहायक पुस्तकें :

1. महादेवी वर्मा के काव्य में लालित्य योजना – डॉ0राधिका सिंह
2. महादेवी की काव्य–साधना – सुरेश चन्द्र गुप्त
3. महादेवी – विचार और व्यक्तित्व – शिवचन्द्र नागर
4. महादेवी (मूल्यांकन–माला) – परमानंद श्रीवास्तव
5. छायावाद – नामवर सिंह
6. महादेवी का काव्य–सौष्ठव – कुमार विमल
7. महादेवी (मूल्यांकन–माला) – इन्द्रनाथ [illegible]
8. महीयशी महादेवी वर्मा – गंगाप्रसाद पाण्डेय
9. महादेवी का नया मूल्यांकन – गणपतिचन्द्र गुप्त

अंक विभाजन:		
	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक	4x15=60

7. प्रेमचन्द्र

पूर्णांक – 100

1. हिन्दी के उपन्यास तथा कहानी साहित्य में प्रेमचन्द्र का स्थान

2. प्रेमचन्द्र की जीवनी और रचनाएं

3. प्रेमचन्द्र और उनका युग : प्रेमचन्द्र–साहित्य की पृष्ठभूमि

4. प्रेमचन्द्र–साहित्य के विविध रूपः उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध आदि

5. प्रेमचन्द्र का जीवन–दर्शन

6. प्रेमचन्द्र–साहित्य के स्रोत

7. प्रेमचन्द्र की उपन्यास–कला और कहानी–कला

नोटः– प्रेमचन्द्र के कहानी साहित्य तथा स्फुट रचनाओं और निबन्धों का अध्ययन

अंक विभाजनः	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक	4x15=60

सहायक पुस्तकें :

1. प्रेमचन्द्रः साहित्यिक विवेचना	–	नन्द दुलारे
2. कलम का सिपाही, प्रेमचन्द्र की प्रांसगिकता	–	अमृतराय
3. प्रेमचन्द्र– घर में	–	शिवरानी देवी
4. प्रेमचन्द्रः एक विवेचन	–	रामविलास शर्मा
5. प्रेमचन्द्रः परिचर्चा	–	प्रो0 कल्याणमल लोढ़ा
6. गोदान (मूल्यांकन माला)	–	राजेश्वर गुरु
7. प्रेमचन्द्र	–	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
8. प्रेमचन्द्र की उपन्यास–यात्रा नव–मूल्यांकन	–	शैलेश जैदी
9. प्रेमचन्द्र	–	कमल किशोर गोयनका
10. प्रेमचन्द्र का सौन्दर्य शास्त्र	–	नवल किशोर नवल
11. प्रेमचन्द्र और भारतीय किसान	–	रामवृक्ष
12. प्रेमचन्द्र के पात्र	–	कोयल कोठारी
13. कलम का मजदूर	–	मदन गोपाल

अंक विभाजनः	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक	4x15=60

8. हजारी प्रसाद द्विवेदी

पूर्णांक – 100

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. आलोचनात्मक प्रश्न एवं व्यावहारिक समीक्षा

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. इतिहास – लेखन
2. इतिहास–दृष्टि

(आलोचनात्मक प्रश्न)

2. हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि

1. सूर – सम्बन्धी आलोचना
2. कबीर – सम्बन्धी आलोचना

(आलोचनात्मक प्रश्न)

3. उपन्यास

1. वाणभट्ट की आत्मकथा
2. चारुचन्द्र लेख
3. अनामदास का पोथा

(आलोचनात्मक प्रश्न)

4. ललित निबन्ध

अशोक के फूल (निबन्ध–संग्रह)

(आलोचनात्मक प्रश्न एवं व्यावहारिक समीक्षा)

अंक विभाजन:	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक	4x15=60

सहायक पुस्तकें :

1. दूसरी परम्परा की खोज – डॉ0 नामवर सिंह
2. शाति निकेतन से शिवालिक तक – सं0शिव प्रसाद सिंह
3. आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास – डॉ0 इन्द्रनाथ सिंह
4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचनात्मक दृष्टि– श्री चन्द्रदेव यादव
5. साहित्य और इतिहास–दृष्टि – डॉ0 मैनेजर पाण्डे

9. कृष्णा सोबती

पूर्णांक – 100

1. कृष्णा सोबती – जीवन–वृत्त
2. साहित्यकार के रूप में कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व
3. महिला उपन्यासकार के रूप में कृष्णा सोबती का योगदान

रचनायें– डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, यारों के यार, जिन्दगीनामा, जिंदारूख, बादल के घेरे कृतियों का अध्ययन

अंक–विभाजनः	व्याख्या	4x10=40
	समीक्षात्मक	4x15=60

सहायक पुस्तकें :

1. कृष्णा सोबती का उपन्यास साहित्य – डॉ0 मंजुला कुलश्रेष्ठ
2. कृष्णा सोबती का कथा साहित्य – डॉ0 प्रेमलता
3. कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में आधुनिक भाव–बोध – डॉ0राजेन्द्र सिंह चौधरी
4. कृष्णा सोबती के उपन्यासों का शिल्प विधान– डॉ0 रमा शर्मा

ख. हिन्दी लोक साहित्य

पूर्णांक– 100

क. लोक साहित्यः अवधारणाएँ

- लोक, लोकवार्ता, लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य।
- लोकवार्ता ओर लोकसाहित्य में अन्तर।
- लोकवार्ता की विशालता और व्यापकता।
- भारत में लोकवार्ता के अध्ययन का इतिहास।
- हिन्दी के आरम्भिक साहित्य में लोकतत्त्व।
- वर्तमान अभिजात साहित्य और लोकसाहित्य का अन्तःसम्बन्ध
- लोकसाहित्य का समाजशास्त्र
- हिन्दी के लोकसाहित्य का सामान्य परिचय।
- हिन्दी के विभिन्न जनपदों में लोक साहित्यसम्बन्धी कार्य का संक्षिप्त इतिहास।
- लोकसाहित्य के अग्रणी विद्वानों के कार्य की समीक्षा और मूल्यांकन।

ख. हिन्दी लोक साहित्य की समस्याएँ

- लोकसाहित्य की अध्ययन–प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ

लोकसाहित्य के संगीत प्रधान रूपों का वर्गीकरण

- लोकगीतः संस्कारगीत, व्रतगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत, जातिगीत
- लोकनाट्य एवं लोकनृत्यनाट्य– रामलीला, कीर्तनियाँ,

स्वांग, संगीत, यक्षगान, भावाई संपेड़ा, विदेसिया, माच, पंडवानी, भांड, तमाशा, नौटंकी, जात्रा, कथकली।

- हिन्दी लोकनाट्य की परम्परा एवं प्रविधि।
- लोकनाट्यों की विशेषताएँ और लोकमंच का स्वरूप एवं उसके उपादान।
- हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोकनाट्यों का प्रभाव।

– लोकनाट्यों की लोकप्रियता के कारण।
– लोकसंगीत लोकवाद्य तथा विशिष्ट लोकधुनें।

लोककथा एवं लोकगाथा

– लोककथा: व्रत–कथा, परी–कथा, नाग–कथा, बोध–कथा,
– कथानक–रूढ़ियाँ।
– लोकगाथा : ढोला–मारू।
– लोकगाथाओं की उत्पत्ति–सम्बन्धी मतों की समीक्षा।
– लोककथाओं की विशेषताएँ।
– आधुनिक कहानी और लोककथा में अन्तर।

लोकसुभाषितों, कहावतों और पहेलियों के भेद, उनकी विशेषताएँ।

सहायक पुस्तकें :

1. हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास (सोलहवाँ भाग) – पं0 राहुल सांकृत्यायन
2. हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास – पं0 कृष्णदेव उपाध्याय
3. लोक साहित्य की भूमिका – पं0 कृष्णदेव उपाध्याय
4. भारतीय लोक साहित्य – श्री श्याम परमार
5. लोकसाहित्य एवं लोकस्वर – पं0 विद्यानिवास मिश्र
6. खड़ी बोली के लोक साहित्य का अध्ययन – डॉ0 सत्या गुप्ता
7. लोकसाहित्य के प्रतिमान – डॉ0 कुंदनलाल उप्रेती
8. भोजपुरी गाथा – सत्यव्रत सिन्हा
9. अवधी लोकगीत और परम्परा – इन्दु प्रकाश पाण्डे
10. ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन– सत्येन्द्र
11. मैथिली लोकगीत – राम इकबाल सिंह 'राकेश'
12. राजस्थानी लोकगीत – सूर्य पारिख

ग. पत्रकारिता

पूर्णांक– 100

1. पत्रकारिता का इतिहास

- – पत्रकारिता का इतिहास
- – पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास
- – भारत में पत्रकारिता का प्रथम प्रयास
- – भारतीय भाषाओं के पत्रों का उदय
- – गांधीयुग के समाचार पत्र
- – स्वतंत्रता और उसके बाद की पत्रकारिता

2. पत्रकारिता : अर्थ और स्वरूप

- – पत्रकारिता का अर्थ
- – पत्रकारिता का महत्त्व
- – पत्रकारिता : कला एवं विज्ञान
- – पत्रकारिता के प्रमुख प्रकार

3. संपादक कला

- – समाचार–संकलन
- – शीर्षक, पृष्ठ–विन्यास, आमुख और समाचार पत्र की प्रस्तुति–प्रक्रिया
- – ले–आउट तथा पृष्ठ सज्जा, दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स)
- – समाचार के विभिन्न स्रोत
- – समाचार समितियां
- – संपादक के कार्य
- – उपसंपादक
- – संवाददाता तथा विशेष संवाददाता
- – दैनिक, मासिक, साप्ताहिक पत्रिका का संपादन

4. पत्रकारिता से संबंधित लेखन :

- संपादकीय, अग्रलेख
- फीचर–लेखन, साक्षात्कार, रिपोर्ताज आदि

5. कानून :

- भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार, सूचनाधिकार एवं मानवाधिकार, पत्रकारों के लिए आचार संहिता
- प्रेस–सम्बन्धी प्रमुख कानून तथा आचार–संहिता
- मुक्त प्रेस की अवधारणा

6. विज्ञापन

7. सामाजिक परिवर्तन में संचार–माध्यमों की भूमिका

8. प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व

सहायक पुस्तकें :

1. हिन्दी पत्रकारिता – पं0 कृष्णा बिहारी मिश्र
2. हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास– पं0 अंबिका प्रसाद वाजपेयी
3. संपादन के सिद्धान्त – डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
4. पत्रकारिता के विविध रूप – डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
5. समाचार पत्र: संपादन कला – पं0 अंबिका प्रसाद वाजपेयी
6. समाचार संपादन एवं पृष्ठ सज्जा– डॉ0 रमेश कुमार जैन
7. समाचार, फीचर–लेखन और संपादन कला– डॉ0 हरि मोहन
8. पत्रकारिता के मूल तत्व – डॉ0 ए0आर0डंगवाल
9. स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता– डॉ0 अर्जुन तिवारी,
10. हिन्दी पत्रकारिता: कल और आज– डॉ0 सुरेश गौतम
11. पत्रकारिता की चुनौतियाँ – श्री गणेश मंत्री
12. पत्रकारिता के परिदृश्य – श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
13. हिन्दी इंटरव्यू: उद्‌भव और विकास– डॉ0 विष्णु पंकज
14. पत्रकारिता : प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि– डॉ0 सुजाता वर्मा

घ. भाषा विज्ञान

पूर्णांक– 100

1. भाषा और भाषा विज्ञान:

भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा–व्यवस्था और भाषा–व्यवहार, भाषा–संरचना और भाषिक प्रकार्य।

भाषा विज्ञान: स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

2. स्वनप्रक्रिया

स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, स्वन की अवधारणा और स्वनों ग वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान की स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।

3. व्याकरण:

रूप–प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूप–प्रक्रिया की अवधारणा और भेद: मुक्त– आबद्ध, अर्थदर्शी, रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य–विश्लेषण, गहन–संरचना और बाह्य संरचना।

4. अर्थविज्ञान:

अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ–परिवर्तन।

5. साहित्य और भाषा–विज्ञान

साहित्य के अध्ययन में भाषा–विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

सहायक पुस्तकें :

1. आधुनिक भाषा–विज्ञान – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी शब्दानुशासन – आचार्य किशोरी दास वाजपेयी
3. भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र – श्री कपिलदेव द्विवेदी
4. भाषा–विज्ञान और हिन्दी – डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना
5. भाषा–विज्ञान: मानक हिन्दी के संदर्भ– श्री बालकृष्ण भारद्वाज
6. भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा – डॉ0 लक्ष्मीकान्त पांडेय
7. भारतीय भाषा शास्त्रीय चिंतन – विद्या निवास मिश्र
8. हिन्दी भाषा के विकास में अपभ्रंश का योग– नामवर सिंह
9. पुरानी हिन्दी – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी,
10. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास– उदय नारायण तिवारी
11. हिन्दी भाषा का इतिहास – धीरेन्द्र वर्मा
12. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी– सुनीति कुमार चटर्जी
13. हिन्दी भाषा: उद्भव, विकास और रूप– हरदेव बाहरी
14. भाषा चिंतन के नये आयाम – राम किशोर शर्मा

ङ. स्त्री विमर्श और हिन्दी साहित्य

1. स्त्री– विमर्श और नारीवाद – स्वरूप एवं परिभाषा

2. स्त्री–मुक्ति आंदोलन और स्त्री विमर्श–ऐतिहासिक रूपरेखा

3. भारतीय सामाजिक संरचना और नारी–प्रश्न एवं पितृसत्ता

पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना, यौनशुचिता बनाम देहमुक्ति, सौन्दर्य के मानक बनाम अश्लीलता,सांस्कृतिक अस्मिता का संघर्ष स्त्री–समानता और र –मक्ति

4. प्राचीन साहित्य–समाज और स्त्री की स्थिति

5. प्राचीन साहित्य (संस्कृत साहित्य) में स्त्री प्रश्न की अभिव्यक्ति का स्वरूप और परिप्रेक्ष्य

6. मध्यकालीन समाज और स्त्री

सामंतवाद और स्त्री–प्रश्न, भक्तिकालीन साहित्य और स्त्री तथा मुक्ति, भक्तिकालीन कवयित्रियों की रचनाओं में अभिव्यक्त स्त्री–पीड़ा का समाज शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

7. आधुनिक नवजागरण, सांस्कृतिक आंदोलन और नारी–मुक्ति

8. आधुनिक विमर्श और नारी–प्रश्न

पूँजीवादी समाज का उदय, आधुनिकता का जन्म और स्त्री–मुक्ति का प्रश्न मार्क्सवाद और स्त्री–मुक्ति, राष्ट्रवादी चिंतन और स्त्री–मुक्ति, उत्तर आधुनिक विमर्श में स्त्री–मुक्ति भूमंडलीकरण और स्त्री–मुक्ति आंदोलन की चुनौतियाँ

9. हिन्दी पत्रकारिता और स्त्री–प्रश्न

आधुनिक संचार माध्यमों में व्यक्त स्त्री का स्वरूप और नारी समानता के प्रश्न

10. साहित्य में स्त्री–चित्रण का बदलता स्वरूप

प्रमुख नारी चरित्र और उनके प्रश्न

भक्तिकाल की प्रमुख कवयित्रियों के चयनित पद (संकलन– सहजोबाई की पदावली, दयाबाई की पदावली, (वेलवेडियर प्रेस) मीराबाई की पदावली (आचार्य परशुराम चतुर्वेदी) (खंड–दो)

सीमान्तिनी उपदेश	–	सं0धर्मवीर
शृंखला की कड़ियाँ	–	महादेवी वर्मा
इदन्नमम	–	मैत्रेयीपुष्पा
आँवा	–	चित्रा मुद्गल
सूरजमुखी अंधेरे में	–	कृष्णा सोबती

कहानियाँ –

1. गगन गिल	एक दिन लौटेगी लड़की, तुम कहोगी रात।
2. अनामिका	स्त्रियां, मौसियां, एक औरत का पहला राजकीय प्रवास–चौक।
3. कात्यायनी	प्रार्थना, नहीं हो सकता तेरा भला, सात भाईयों के बीच हंपा, हाकी खेलती लड़कियां, कहती हैं औरतें।
4. जया जादावानी	कयामत का दिन उर्फ कब्र से बाहर।
5. नमिता सिंह	गणित
6. नासिरा शर्मा	सरहद के इस पार
7. मन्नू भंडारी	ऊंचाई
8. ममता कालियालड़के	

सहायक पुस्तकें :

1. स्त्री और पराधीनता	–	जे0एस0गिल
2. स्त्री उपेक्षिता	–	सीमन द बुआ
3. स्त्री के लिए जगह	–	सं0 राज किशोर
4. आधुनिकता और स्त्री	–	सं0 राज किशोर
5. हिस्ट्री ऑफ डूइंग	–	राधा कुमार
6. पॉलिटिक्स ऑफ पॉसिबल–		कुमकुम सांगरी
7. स्त्री अंतिम उपनिवेश	–	प्रभा खेतान

च. दलित विमर्श और हिन्दी साहित्य

पूर्णांक– 100

दलित–विमर्श :

क. समकालीन विमर्श और दलित–विमर्श

1. विमर्श: अभिप्राय और दलित–विमर्श
2. दलित–विमर्श और अन्य समकालीन विमर्श
3. दलित–विमर्श : विविध सन्दर्भ और भूमिका
4. दलित–विमर्श के प्रेरणा स्रोत

ख. दलित–विमर्श का वैचारिक आधार

1. दलित–विमर्श की पृष्ठभूमि
2. ज्योतिबा फुले और सत्यशोधक समाज–आन्दोलन
3. डॉ0 अम्बेडकर और दलित–मुक्ति आन्दोलन

ग. दलित–विमर्श के अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक आन्दोलन

1. लोकायत परम्परा
2. बुद्धकालीन साहित्य–परम्परा
3. सिद्ध और नाथ–परम्परा
4. संत साहित्य–परम्परा

घ. दलित–साहित्य

1. दलित–साहित्य का आशय और दलित–चेतना
2. साहित्य में सामाजिक अस्मिताओं का प्रश्न और गैर दलित–साहित्य
3. साहित्य में सामाजिक अस्मिताओं का प्रश्न और गैर दलित–साहित्य
4. दलित–साहित्य का उद्‌भव और विकास
5. दलित–साहित्य का अखिल भारतीय स्वरूप

ड. दलित–साहित्य की अवधारणा

1. अवधारणा का तात्पर्य और दलित साहित्य
2. प्रमाणिकता का प्रश्न तथा स्वानुभूति और सहानुभूति का सवाल

3. दलित–साहित्य के सामाजिक–सांस्कृतिक सरोकार

4. प्रमुख प्रवृत्तियाँ

च. दलित–साहित्य के सौन्दर्य तत्व

1. दलित–साहित्य का दृष्टिकोण और वस्तु एवं प्रतिमान

2. दलित–साहित्य की अभिव्यक्ति

3. दलित–साहित्य की भाषा

4. दलित–साहित्य आलोचना

हिन्दी–दलित–साहित्य : परम्परा और विकास

क. हिन्दी–दलित–कविता : अस्तित्व और अस्मिता का संघर्ष

प्रमुख कविताएँ

1. पं0 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	जल्द जल्द पैर बढ़ाओ, झींगर डटकर बोला
2. नागार्जुन	हरिजन–गाथा
3. दयानन्द बटोही	यातना की आँखें
4. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी	गूंगे शब्दों की चीख
5. ओम प्रकाश वाल्मीकि	बस्स! बहुत हो चुका
6. मोहनदास नैमिशराय	रात में डूबे लोग
7. मलखान सिंह	सुनो ब्राह्मण!
8. डॉ0 जगदीश गुप्त	शंबूक

ख. हिन्दी–दलित–कथा–साहित्य संदर्भ और कथावस्तु की नवीनता, संवेदना और शिल्प का वैशिष्ट्य, सामाजिक–सांस्कृतिक सरोकार

उपन्यासकार	उपन्यास
1. जगदीश चन्द्र	धरती धन न अपना
2. मोहनदास नैमिशराय	मुक्तिपर्व
3. प्रेमशंकर	बित्ते भर जमीन
4. सूरजपाल चौहान	तिरस्कृत

कहानीकार	कहानी
1. मुंशी प्रेमचंद	ब्रह्म का स्वांग, सद्गति, कफन
2. ओम प्रकाश वाल्मीकि	पच्चीस चौका डेढ़ सौ घुसपैठिए
3. मोहनदास नैमिशराय	आवाजें
4. कावेरी	सुमंगली
5. कुसुम मेघवाल	अंसारी
6. नीरा परमार	वैतरणी
7. प्रेम कपाड़िया	सफाई वाला
8. जय प्रकाश कर्दम	नौ बार
9. सूरजपाल चौहान	परिवर्तन की बात
10. बी0आर0 नायर	चतुरी चमार की चाट
11. विपिन त्रिपाठी	कंधार

ग. हिन्दी–दलित–आत्मकथा : सामाजिक, संस्कृति, आर्थिक जीवन के दस्तावेज

1. मोहनदास नैमिशराय	अपने–अपने पिंजरे
2. आधुनिकता के आइने में दलित	अभय कुमार दुबे (सं0)
3. दलित–साहित्य या सौन्दर्य–शास्त्र	ओमप्रकाश वाल्मीकि
4. मेरा दलित चिंतन	एन0सिंह
5. दलित विमर्श की भूमिका	कंवल भारती
6. भारतीय दलित साहित्यः एक परिचय	तेजस्वी कट्टीमनी
7. आधुनिक भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक क्रांति के प्रणेता ज्योतिबा फुले	डी0के0 खापड़े

8. दलितों के रूपांतर की प्रक्रिया — नरेन्द्र

9. दलित–साहित्य और सामाजिक न्याय — पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

10. दलित–साहित्यः उद्‌देश्य और वैचारिकता — बाबूराम बाबुल

11. दलित–चेतनाः साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार — रमणिका गुप्ता

12. हिन्दी की दलित–पत्रकारिता पर पत्रकार अम्बेडकर का प्रभाव — श्योराज सिंह बैचेन

13. दलित–साहित्य की अवधारणा और प्रेमचन्द — सदानंद साही

14. दलित–साहित्य का सौन्दर्य–शास्त्र — शरण कुमार लिंबाले

15. दलित समाज और आन्दोलन — मोहनदास नैमिशराय

छ. प्रयोजन मूलक हिन्दी

पूर्णांक–100

- **अनुवाद एवं द्विभाषकी (इण्टरप्रटेशन)**

अनुवाद की परिभाषा

वर्तमान भारतीय बहुभाषीय स्वंरूप में उपयोग

इण्टरप्रटेशन–

क. परिभाषा एवं उपादेयता

ख. द्विभाषिकी में ध्यान रखने योग्य बातें

- **संचार माध्यम**

प्रिंट मीडिया

1. समाचार पत्र के अवयव
2. समाचार पत्रों में सम्पादकीय की महत्ता
3. समाचार और तटस्थता
4. पत्रकारों के लिए निर्धारित आचार–संहिता

- **इलेक्ट्रानिक मीडिया**

1. श्रव्य– आकाशवाणी एवं मल्टीमीडिया,

आकाशवाणी कार्यक्रम – अ. स्वरूप और प्रकार

आ. समाचार, वार्त्ता, कहानी, फीचर, रेडियो–रूपक आदि

2. श्रव्य एवं दृश्य –

दूरदर्शन कार्यक्रम – स्वरूप और प्रकार,

दूरदर्शन में राष्ट्रीय चैनल और अन्य विविध चैनल

दूरदर्शन कार्यक्रमों में विज्ञापन की भूमिका

3. समाचार ,धारावाहिक, फीचर, टेलीफिल्म, सीधा प्रसारण, आदि कार्यक्रमों को तैयार करने की प्रविधियां तथा प्रस्तुति

- **इण्टरनेट, ई मेल, टेली–कॉन्फ्रेंसिंग आदि अधुनातन विधाओं का सूक्ष्म परिचय**
- **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रयोजन मूलक हिन्दी (फंक्शनल हिन्दी) के पाठ्यक्रम के अनुरूप अन्य विविध बिन्दु**

अंक विभाजन: सैद्धान्तिक प्रश्न 10x4=40

व्यावहारिक प्रश्न 10x4=40

बहुविकल्पीय प्रश्न 10x2=20

सहायक ग्रन्थ:

1. सूचना क्रान्ति और विश्व भाषा हिन्दी – डॉ0 हरिमोहन
2. जनसम्पर्क, विज्ञापन एवं प्रसार माध्यम – डॉ0 एन0सी0पंत
3. इंटरनेट पत्रकारिता – सुरेश कुमार
4. कम्प्यूटर और हिन्दी – डॉ0 हरिमोहन
5. हिन्दी इन्टरव्यू: उद्‌भव और विकास – डॉ0 विष्णु पंकज
6. पत्रकारिता : प्रशिक्षण एवं पृष्ठ–सज्जा – डॉ0 रमेश कुमार जैन
7. सूचना प्रौद्योगिकी और जन–माध्यम – डॉ0 हरिमोहन
8. संपादन के सिद्धान्त – श्री रामचन्द्र तिवारी
9. समाचार–संपादन एवं पृष्ठ–सज्जा – डॉ0 रमेश कुमार जैन
10. हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय एकता – डॉ0 हरिमोहन, जयंत शुक्ल
11. पत्रकारिता– इतिहास और प्रश्न – कृष्ण बिहारी मिश्र
12. हिन्दी पत्रकारिता:स्वरूप,आयाम और सम्भावना – डॉ0 पदमा पाटिल, – डा0 महेश दिवाकर
13. दूरसंचार : नई दिशाएँ – डॉ0 सी0एल0गर्ग
14. संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता – अशोक कुमार शर्मा

एम.ए. हिन्दी (उत्तरार्द्ध) 2009–10

चतुर्थ प्रश्नपत्र

विविध विकल्प (कोई एक)

पूर्णांक– 100

(क) साहित्यिक निबन्ध एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. साहित्यिक निबन्ध — अंक 50
2. हिन्दी भाषा साहित्य के समग्र मूल्यांकन हेतु 50 वस्तुनिष्ठ प्रश्न अंक 50

अथवा

(ख) लघु शोध–प्रबंध (पृष्ठ संख्या 100–150 के मध्य) — पूर्णांक 100

अति आवश्यक नोट–

लघु शोध प्रबन्ध का चयन एम0ए0 प्रथम वर्ष में 55 प्रतिशत अथवा अधिक अंक . त करने वाले संस्थागत विद्यार्थी ही कर सकेंगे। यह प्रबन्ध विश्वविद्यालय द्वारा शोध– निर्देशक के रूप में मान्य किसी भी एक विभागीय प्राध्यापक के निर्देशन में प्रस्तुत किया जाएगा। विभागीय प्राध्यापकों में से विश्वविद्यालय द्वारा मान्य शोध–निर्देशक उपलब्ध न होने की दशा में स्थानीय स्तर पर विश्वविद्यालय द्वारा अनुमन्य निर्देशक के निर्देशन में कुलसचिव के संज्ञान में लाकर प्रस्तुत किया जा सकेगा। विद्यार्थी लघु शोध प्रबन्ध की दो प्रतियाँ लिखित–परीक्षा आरम्भ होने से एक सप्ताह पहले निर्देशक के पास जमा करेंगे। निर्देशक के द्वारा अपनी संस्तुति सहित लघु शोध प्रबंध की एक प्रति महाविद्यालय के प्राचार्य के माध्यम से कुलसचिव, एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली को भेजी जाएगी। बाह्य परीक्षकों की सूची विषय समिति के संयोजक द्वारा दी जाएगी। परीक्षकों की सूची में किसी एक परीक्षक का चयन, कुलपति महोदय करेंगे, जिसके द्वारा लघु शोध प्रबंध का मूल्यांकन किया जाएगा और जिसके पूर्णांक 50 होंगे। शोध प्रबंध की दूसरी प्रति का मूल्यांकन निर्देशक द्वारा ही किया जाएगा। इसके पूर्णांक भी 50 ही होंगे। विशेष परिस्थिति में लघु शोध प्रबंध जमा करने की अवधि में वृद्धि करने एवं निर्देशक परिवर्तित करने का

अधिकार कुलपति महोदय को होगा।

एम0ए0 हिन्दी (उत्तरार्द्ध) 2009–10

पंचम प्रश्नपत्र मौखिक परीक्षा एवं प्रोजेक्ट (50+50)

पूर्णांक– 100

उत्तरार्द्ध की परीक्षा के उपरांत मौखिक परीक्षा होगी, जोकि पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध के सभी प्रश्न पत्रों पर आधारित होगी। प्रोजेक्ट में किसी स्तरीय रचनाकार एवं रचना पर केन्द्रित आलोचनात्मक मूल्यांकन लगभग 50 पृष्ठ तक टंकित सामग्री के रूप में लिखित परीक्षा के अंतिम प्रश्न –पत्र तक परीक्षा केन्द्र पर प्रस्तुत करना होगा। प्रोजेक्ट में अनुवाद, सृजनात्मक लेखन, पत्रकारिता के अनुभव के रूप में किया गया कार्य भी मान्य होगा। यह संस्थागत और व्यक्तिगत दोनों तरह के छात्रों के लिए अनिवार्य है।

सम्पादकों/संकलनकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत पुस्तकों की संस्तुतियाँ

बी.ए. (प्रथम वर्ष) सामान्य हिन्दी

प्रथम प्रश्न पत्र .

हिन्दी भाषा : प्रकृति स्वरुप और ऐतिहासिक परिदृश्य — सं0 डॉ0 शंकर लाल शर्मा,

द्वितीय प्रश्न पत्र

हिन्दी भाषा : व्यावहारिक धरातल — डॉ0 वन्दना,
डॉ0 विदुषी भारद्वाज,
डॉ0 शचीन्द्र वशिष्ठ

बी.ए. (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र

काव्य सुमन — डॉ0 मंजरी त्रिपाठी
डॉ0 विद्याधर त्रिपाठी

एम.ए. हिन्दी (पूर्वार्द्ध)

प्रथम प्रश्न पत्र

कहानी संग्रह	डॉ0 शंकर लाल शर्मा
	डॉ0 कंचन शर्मा
निबन्ध संग्रह	डॉ0 मंजरी त्रिपाठी
प्रतिनिधि गद्य विधायें	डॉ0 शंकर लाल शर्मा

द्वितीय प्रश्न पत्र

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य संकलन	डॉ0 मंजरी त्रिपाठी
	डॉ0 विद्याधर त्रिपाठी

पंचम प्रश्न पत्र

भारतीय साहित्य	डॉ0 मूलचन्द्र गौतम
	डॉ0 शचीन्द्र वशिष्ठ
	डॉ0 एस0पी0अग्निहोत्री

एम.ए. हिन्दी (उत्तरार्द्ध)

प्रथम प्रश्न पत्र

आधुनिक हिन्दी काव्य	डॉ0 दिलीप पाण्डेय

द्वितीय प्रश्न पत्र

एकांकी संकलन	डॉ0 मूलचन्द्र गौतम
	डॉ0 रामअवध शास्त्री

नोट– उक्त संस्तुत संकलनों को विषय–पाठ्यक्रम समिति ने प्रस्तावित पाठ्यक्रम के आलोक में अवलोकित एवं मूल्यांकित किया है तथा उन्हें विद्यार्थियों के लिए सर्वथा उपयोगी पाकर सर्वसम्मति से संस्तुत किया है। शिक्षक एवं छात्र अन्य संकलनों में प्रस्तावित पाठ्य सामग्री मिलने पर उनका भी उपयोग करने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

पुनश्चः उपर्युक्त संस्तुतियाँ विषय पाठ्यक्रम समिति ने सीमित जानकारी एवं ज्ञान के आधार पर की हैं।